>

Title: Situation arising out of non-payment of allowance to women health workers in the country.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): सभापति महोदय, देश में 28 लाख आंगनवाड़ी सेविकाएं और सहायिकाएं हैं। सरकार ने आंगनवाड़ी सेविकाओं के मासिक भत्ते को जो पहले 1000 रुपए था, फिर उसे 1500 रुपए कर दिया और अब और बढ़ाकर 3000 रुपए कर दिया है। इसी तरह सहायिकाओं के मासिक भत्ते को जो पहले 500 रुपए था, फिर 750 रुपए किया और अब बढ़ाकर 1500 रुपए कर दिया है। लेकिन स्वास्थ्य विभाग के तहत जो छः लाख आशाकर्मी आती हैं, मैं उनकी व्यथा यहां बताना चाहता हूं। हमारे देश में 1000 की आबादी के ऊपर एक आशाकर्मी काम कर रही है। मुझे नहीं मालूम कि सरकार को इसकी जानकारी है या नहीं कि उन्हें कोई मासिक भत्ता नहीं मिलता है। जब कभी महीने में एकाध काम मिलता है तो उन्हें 100 रुपए या 200 रुपए तक मुश्किल से मिलते हैं। ऐसा अंधेर सरकार के अधीन इन आशाकर्मियों के साथ हो रहा है और साथ ही दोहरा मानदंड भी सरकार द्वारा अपनाया जा रहा है, क्योंकि एक तरफ तो सेविका और सहायिका को मासिक भत्ता दिया जाता है, जो अब बढ़ाकर तीन गुना तक कर दिया है। दूसरी तरफ आशाकर्मी को कुछ नहीं मिलता है। मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि आखिर इन छः लाख आशाकर्मियों का क्या कसूर है? ये आशाकर्मी सरजमीं पर दाइयों का काम करती हैं, लेकिन स्वास्थ्य विभाग उनकी कोई सुध नहीं ले रहा है। नेशनल रूरल हैल्थ मिशन की संचालन समिति ने यह प्रस्ताव पारित किया था कि आशाकर्मियों को कम से कम 500 रुपए मासिक भत्ता मिलना चाहिए। उसके लिए कहा जा रहा है कि वित्त विभाग से बात करेंगे या उससे बात करेंगे और इसे लागू नहीं किया जा रहा है। दुनिया में किसी भी जगह पर ऐसा नहीं होता है। मैं सदन के सभी माननीय सदस्यों से और आसन से भी अपेक्षा करता हूं कि संसदीय कार्य मंत्री के संज्ञान में वे इस बात को लाएं। जब आंगनवाड़ी की सेविकाओं और सहायिकाओं का वेतन बढ़ा दिया है तो आशाकर्मियों को क्यों नहीं मासिक भत्ता दिया जा रहा है। नेशनल रूरल हैल्थ मिशन की संचालन समिति ने जो प्रस्ताव पास किया था उन्हें 500 रुपए प्रति माह देने का, कम से कम वह तो उन्हें दिलाकर इसकी शुरूआत तो करनी चाहिए। अगर सरकार उनके साथ न्याय नहीं करेगी, तो फिर कौन करेगा। आज तमाम राज्यों में आशाकर्मी इस बात को लेकर संगठित होकर आंदोलन कर रही हैं और अपना कलेजा पीट रही हैं। दिल्ली में भी जंतर मंतर पर उन्होंने प्रदर्शन किया था। ऐसी हालत में जबकि देश के सर्वोच्च पद पर एक महिला पदासीन है, यहां आसन पर भी एक महिला हैं, यूपीए की अध्यक्षा भी एक महिला हैं और विपक्ष की नेता भी एक महिला हैं, तो फिर इन गरीब महिलाओं को क्यों वंचित किया जा रहा है। हम महिलाओं को सम्मान और फायदा देने वाली बात करते हैं, लेकिन जो महिलाएं सरजमीं पर है, उनको सुनने और देखने वाला कोई नहीं है। आश्चर्य यह है कि कोई जानने वाला भी नहीं है।

यशवंत सिन्हा जी कुछ दिन पहले सदन में भाषण करते हुए बता रहे थे कि सरकार की नीति के तहत 40 वर्ष की विधवा को पेंशन मिलेगी, उससे कम उम्र की विधवा को नहीं मिलेगी। इस तरह से विधवाओं के साथ भी अत्याचार हो रहा है। एक ओर तो कहा जाता है कि 40 वर्ष की विधवा होने पर पेंशन देंगे, रोजगार देंगे, आप समझ सकते हैं कि कैसा रोजगार आप किसी विधवा को देंगे, जबकि इन गरीब महिलाओं को मासिक भत्ते से भी वंचित कर दिया गया है। इतने सारे बड़े पदों पर महिलाओं के रहते हुए भी महिलाओं के साथ ऐसा अन्याय हो रहा है, जो पहले कभी नहीं हुआ था।

इसीलिए मैं मांग करता हूं कि सदन के सभी पार्टी के नेता यह जानें कि आशा को कोई मासिक भत्ता नहीं मिलता। आंगनवाड़ी सेविकाओं के भत्ते में वृद्धि हुई है और लोगों ने उसकी प्रशंसा की है। लेकिन आशा क्योंकि 6 लाख की संख्या है, उसका स्वर मजबूत नहीं, गरीब महिलाएं हैं और बच्चों के नेपकिन बदलने और बीमार की सेवा का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है, लेकिन उसके साथ अन्याय हो रहा है। मैं पूछना चाहता हूं कि यह अन्याय कब तक चलेगा। सभापति जी, मैं आपको पंच मानता हूं और आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि कृपा करके इस बात की जानकारी ली जाए। जबकि नेशनल रुरल हैल्थ मिशन की संचालन समिति ने पारित किया है कि उन्हें बढ़ाकर भत्ता मिलना चाहिए, फिर वित्त विभाग में कौन अधिकारी हैं जिन्होंने उसे रोका हुआ है, मैं यह जानना चाहता हूं। कब तक यह अन्याय होगा, इसका नोटिस माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी आप तो लीजिए। यह दोहरा मापदंड सरकार में क्यों अपनाया जा रहा है और कौन अधिकारी इसमें रोड़ा अटका रहे हैं, इसकी जानकारी ली जाए।

MR. CHAIRMAN : Hon. Member, you have made your point. What is your demand finally?

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : अन्याय के कारण जंग होती है, आंदोलन होता है, इसलिए महोदय, इस पर विचार किया जाए।

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, those of you who want to associate themselves with this matter, please send your slips at the Table.

...(*Interruptions*)

सभापति महोदय : श्री दारा सिंह चौहान,

श्री धनन्जय सिंह,

श्री अर्जुन राम मेघवाल,

श्रीमती कमला देवी पटले,

श्री अशोक अर्गल,

श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय,

श्री जे.एम. आरुन रशीद,

श्री विष्णु पद राय,

श्री ए.टी.नाना पाटील,

श्री जगदम्बिका पाल व

डा. रामचन्द्र डोम को माननीय रघुवंश प्रसाद जी के विषय के साथ एसोसिएट किया जाता है।